संखेज्जदिभागो होदि । विहारवदिसत्थाण-वेदण कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । केत्तियमेत्तेणूणा ? तदियपुढवीए हेट्ठिल्लजोयण-

---

तारागण पृथिवीसे ७९० योजन ऊपरसे लगाकर ९०० योजन तक अर्थात् ११० योजन-बाहल्य आकाशमें रहते हैं । (देखो त्रिलोकसार गाथा ३३२-३३४) । अतः एक लाख योजन व्यासवाले जम्बूद्वीपके ऊपर ११० योजन क्षेत्रका घनफल निकालनेसे–

$१२ \times १०^{५} \times १०^{५} \times ४४० = ५२८ \times १०^{११}$ घनकोश हुए । इस प्रकार तारोंके घनफलमें १८ अंक हैं, किन्तु जम्बद्वीपसम्बन्धी उक्त क्षेत्रमें केवल १४ अंक आते हैं । इस प्रकार वे सब तारे उक्त क्षेत्रमें नहीं समा सकते । किन्तु यदि तारोंमें उत्सेधांगुलोंका प्रमाण स्वीकार किया जाय और उक्त क्षेत्रमें प्रमाणांगुलोंका, तो उक्त क्षेत्रके प्रमाणको $५००^{३}$ से गुणा कर देने पर वह क्षेत्र $५२८ \times १२५ \times १०^{१७} = ६६ \times १०^{२०}$ अर्थात् २२ अंक प्रमाण हो जाता है, जिससे उक्त तारोंको उस क्षेत्रके भीतर सावकाश रहनेके लिए स्थान मिल जाता है । इसीलिये धवलाकारने कहा है कि विमानोंके प्रमाणमें उत्सेधांगुल ही ग्रहण करना चाहिए और यही बात त्रिलोकप्रज्ञप्ति आदि ग्रंथोंसे भी सिद्ध है ।

धवलाकारने जो दूसरे प्रकारसे उक्त वैषम्यका समाधान किया है कि विमानोंके प्रमाणमें प्रमाणांगुल ग्रहण करके भी जम्बूद्वीप और लवणसमुद्र, दोनोंके आश्रयसे उन विमानोंके अवस्थानके योग्य क्षेत्र बन जाता है, सो यह बात गणितमें ठीक नहीं उतरती, क्योंकि, जम्बूद्वीप और लवणसमुद्र दोनोंके ऊपरका ११० योजन बाहल्य क्षेत्र केवल––

$६ \times १०^{५} \times ५ \times १०^{५} \times ४४० = १३२ \times १०^{१३}$ घनकोश आता है । यह क्षेत्र केवल १६ अंक प्रमाण होनेसे केवल जम्बूद्वीपके तारोंके लिए भी पर्याप्त अवकाश नहीं प्रदान कर सकता । तिसपर लवणसमुद्रसम्बन्धी चार चन्द्रोंके परिवारके तारोंको भी वहां अवकाश प्राप्त होना है । इस प्रकार तारोंके विमानोंको प्रमाणांगुलोंके मापमें लेकर धवलाकारने उनको किस प्रकार अवकाश प्राप्त कराया है, यह समझमें नहीं आता ।

सासादनसम्यग्दृष्टि व्यन्तर देवोंका स्वस्थानक्षेत्र भी तिर्यग्लोकका संख्यातवां भागमात्र होता है ।

शंका– वह कैसे ?

समाधान– व्यन्तर देवोंकी राशिको स्थापित करके एक एक व्यन्तरावासमें संख्यात ही व्यन्तर देव होते हैं । इसलिए संख्यात रूपोंसे व्यन्तर देवोंकी राशिमें भाग देनेपर व्यन्तर देवोंके आवासोंकी संख्या हो जाती है । किन्तु यह क्रम भवनवासी और सौधर्मादि कल्पवासी देवोंके नहीं है, क्योंकि, उनमें असंख्यात योजन आयामवाले संख्यात भवनों और विमानोंमें असंख्यात देव और देवियां रहती हैं । कारण, यदि ऐसा न माना जाय, तो उनकी राशिके असंख्यातपना नहीं बन सकता है । पुनः व्यन्तरोंके आवासक्षेत्रको अपने विमानोंके भीतरी संख्यात घनांगुलोंसे गुणित करनेपर सासादनसम्यग्दृष्टि व्यन्तर देवोंका स्वस्थानक्षेत्र हो जाता

सहस्सेण । मारणंतियसमुग्घादगदेहि बारह चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । तं जहा- मेरुमूलादो उवरि जावीसिपब्भारपुढवि त्ति सत्त रज्जू, हेट्ठा जाव छट्ठी पुढवि त्ति पंच रज्जू । एदाओ मेलिदे सासणमारणंतियखेत्तायामो होदि । णवरि हेट्ठिमजोयण-सहस्सेण ऊणो त्ति वत्तव्वो । जदि सासणा एइंदिएसु उपज्जंत्ति, तो तत्थ दो गुणट्ठाणाणि होंति । ण च एवं संताणिओगद्दारे तत्थ एक्कमिच्छादिट्ठिगुणप्प-दुप्पायणादो[1] दव्वाणिओगद्दारे वि तत्थ एगगुणट्ठाणदव्वस्स पमाणपरूवणादो च[2] । को एवं भणदि जधा सासणा एइंदिएसुप्पज्जंति त्ति । किंतु ते तत्थ मारणंतियं मेल्लंति त्ति अम्हाणं णिच्छओ । ण पुण ते तत्थ उप्पज्जंति छिण्णाऊअकाले तत्थ सासणगुणाणुवलंभादो । जत्थ सासणाणमुववादो णत्थि, तत्थ वि जदि सासणा

है । इन तीनों ही क्षेत्रोंको अर्थात् सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंचोंके स्वस्थानक्षेत्रको, सासादन-सम्यग्दृष्टि ज्योतिष्क देवोंके स्वस्थानक्षेत्रको और सासादनसम्यग्दृष्टि व्यन्तर देवोंके स्वस्थान-क्षेत्रको इकट्ठे मिलानेपर तिर्यग्लोकका असंख्यातवां भाग होता है । विहारवत्स्वस्थान, वेदना-समुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातगत सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने लोकनालीके चौदह भागोंमेंसे देशोन आठ भागप्रमाण क्षेत्रको स्पर्श किया है ।

शंका– यहां देशोनसे तात्पर्य कितने प्रमाण क्षेत्रसे न्यून है ?

समाधान– तीसरी पृथिवीके नीचेके एक हजार योजनप्रमाण क्षेत्रसे न्यून क्षेत्र देशोनसे अभीष्ट है ।

मारणान्तिकसमुद्घातगत सासादनसम्यग्दृष्टियोंने लोकनालीके चौदह राजुओंमेंसे देशोन बारह भागप्रमाण क्षेत्रको स्पर्श किया है । वह इस प्रकारसे जानना चाहिए— सुमेरुपर्वतके मूलभागसे लेकर ऊपर ईषत्प्राग्भारपृथिवी तक सात राजु होते हैं और नीचे छठी पृथिवी तक पांच राजु होते हैं । इन दोनोंको मिला देनेपर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके मारणान्तिकक्षेत्रकी लम्बाई हो जाती है । विशेष बात यह है कि छठी पृथिवीके नीचेके एक हजार योजनसे न्यून क्षेत्र यहांपर भी कहना चाहिए ।

शंका– यदि सासादनसम्यग्दृष्टि जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं तो उनमें (वहांपर) दो गुणस्थान प्राप्त होते हैं । किन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि, सत्प्ररूपणा अनुयोगद्वारमें, एकेन्द्रियोंमें एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान ही बताया गया है, तथा द्रव्यानुयोगद्वारमें भी उनमें एक ही गुणस्थानके द्रव्यका प्रमाण-प्ररूपण किया गया है ।

समाधान– कौन ऐसा कहता है कि सासादनसम्यग्दृष्टि जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं ? किन्तु वे उस गुणस्थानमें मारणान्तिकसमुद्घातको करते हैं ऐसा हमारा निश्चय है ।

---

१ एइंदिया बीइंदिया तीइंदिया चउरिंदिया असण्णिपंचिंदिया एक्कम्मि चेव मिच्छाइट्ठिट्ठाणे । जी. सं. सू. ३६.

२ जी. द. सू. ७४–७६.

मारणंतियं मेल्लंति, तो सत्तमपुढविणेरइया वि सासणगुणेण सह पंचिंदियतिरिक्खेसु मारणंतियं मेल्लंतु[1], सासणत्तं पडि विसेसाभावादो ? ण एस दोसो, भिण्णजादित्तादो। एदे सत्तमपुढविणेरइया पंचिंदियतिरिक्खेसु गब्भोवक्कंतिएसु चेव उप्पज्जणसहावा, ते पुण देवा पंचिंदिएसु एइंदिएसु य उप्पज्जणसहावा, तदो ण समाणजादीया। जं जाए जादीए पडिवण्णं, तं ताए चेव जादीए होदि त्ति पडिवज्जेदव्वं, अण्णहा अणवत्थापसंगादो। तम्हा सत्तमपुढविणेरइया सासणगुणेण सह देवा इव मारणंतियं ण करेंति त्ति सिद्धं। देवसासणा एइंदिएसु मारणंतियं करेमाणा सव्वलोगेइंदिएसु किण्ण मारणंतियं करेंति ? ण, तेसिं सासणगुणपाहम्मेण लोगणालीए बाहिरमुप्पज्जण-

न कि वे उस गुणस्थानमें, अर्थात्, सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें उत्पन्न होते हैं। क्योंकि, छिन्न हुई आयुके कालमें उनमें सासादनगुणस्थान नहीं पाया जाता है।

शंका— जहां पर सासादनसम्यग्दृष्टियोंका उत्पाद नहीं है, वहां पर भी यदि सासादनसम्यग्दृष्टि जीव मारणान्तिकसमुद्घातको करते हैं, तो सातवीं पृथिवीके नारकियोंको सासादनगुणस्थानके साथ पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें मारणान्तिकसमुद्घात करना चाहिए, क्योंकि, सासादनगुणस्थानत्वकी अपेक्षा दोनोंमें कोई विशेषता नहीं है, अर्थात् समानता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, देव और नारकी इन दोनोंकी भिन्न जाति है। ये सातवीं पृथिवीके नारकी गर्भजन्मवाले पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंमें ही उपजनेके स्वभाववाले हैं, और वे देव पंचेन्द्रियोंमें तथा एकेन्द्रियोमेंउत्पन्न होनेरूप स्वभाववाले हैं, इसलिए दोनों समान जातीय नहीं हैं। जो जिस जातिमें प्रतिपन्न है, अर्थात् स्वीकृत है, वह उसी ही जातिका माना जाता है, ऐसा स्वीकार करना चाहिए, अन्यथा अनवस्थादोषका प्रसंग आ जायगा। इसलिए सातवीं पृथिवीके नारकी सासादनगुणस्थानके साथ देवोंके समान मारणान्तिकसमुद्घात नहीं करते हैं, यह बात सिद्ध हुई।

शंका— सासादनसम्यग्दृष्टि देव, जबकि एकेन्द्रियोंमें मारणान्तिकसमुद्घात करते हुए पाए जाते हैं, तो फिर सर्वलोकवर्ती एकेन्द्रियोंमें क्यों नहीं मारणान्तिकसमुद्घात करते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उनके सासादनगुणस्थानकी प्रधानतासे लोकनालीके बाहर उत्पन्न होनेके स्वभावका अभाव है। और लोकनालीके भीतर मारणान्तिकसमुद्घातको करते हुए भी भवनवासी लोकके मूलभागसे ऊपर ही देव या तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीव मारणान्तिकसमुद्घातको करते हैं, उससे नीचे नहीं, क्योंकि, ऐसा वे सासादनगुणस्थानकी प्रधानता से ही करते हैं।

शंका— राजुप्रतरप्रमाण पृथिवी ऊपर नहीं है। देव भी सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंमें नहीं उत्पन्न होते हैं और वायुकायिक जीवोंको छोड़कर शेष बादर एकेन्द्रिय जीव पृथिवीके बिना अन्यत्र रहते नहीं हैं। इसलिए सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके मारणान्तिकक्षेत्रका बारह बटे चौदह ($\frac{१२}{१४}$) भागका उपदेश घटित नहीं होता है ?

१ प्रतिषु 'मेल्लंति' इति पाठः।

सहावाभावादो। लोगणालीए अब्भंतरे मारणंतियं करेंता वि भवणवासियजगमूलादो-उवरिं चेव देव-तिरिक्खसासणसम्मादिट्ठिणो मारणंतियं करेंति, णो हेट्ठा। कुदो? सासणगुणपाहम्मादो चेव। रज्जुपदरमेत्तपुढवी उवरि णत्थि। देवा वि सुहुमेइंदिएसु ण उप्पज्जंति। ण च बादरेइंदिया वाउक्काइयवदिरित्ता पुढवीए विणा अण्णत्थ अच्छंति। तदो सासणमारणंतियखेत्तस्स बारह चोद्दसभागोवदेसो ण घडदि त्ति? ण एस दोसो, ईसिपब्भारपुढवीदो उवरि सासणाणमाउकाइएसु मारणंतियसंभवादो, अट्ठमपुढवीए च एगरज्जुपदरब्भंतरं सव्वमावूरिय ट्ठिदाए तेसिं मारणंतियकरणं पडि विरोहाभावादो च। वाउकाइएसु सासणा मारणंतिय किण्ण करेंति? ण, सयल-सासणाणं देवाणं व तेउ-वाउकाइएसु मारणंतियाभावादो, पुढविपरिणाम-विमाण-तल-सिला-थंभ-थूलतल-उब्भसालहंजिया[1]-कुड्डु-तोरणादीणं तदुप्पत्तिजोगाणं दंसणादो च।

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ईषत्प्राग्भार पृथिवीसे ऊपर सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अप्कायिक जीवोंमें मारणान्तिकसमुद्धात संभव है, तथा एक राजुप्रतरके भीतर सर्वक्षेत्रको व्याप्त करके स्थित आठवीं पृथिवीमें उन जीवोंके मारणान्तिकसमुद्धात करनेके प्रति कोई विरोध भी नहीं है।

शंका — सासादनसम्यग्दृष्टि जीव, वायुकायिक जीवोंमें मारणान्तिकसमुद्धातको क्यों नहीं करते हैं?

समाधान — नहीं, क्योंकि सकल सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका देवोंके समान तैजसकायिक और वायुकायिक जीवोंमें मारणान्तिकसमुद्धातका अभाव माना गया है और पृथिवीके परिणमनस्वरूप विमान, शय्या, शिला, स्तम्भ, स्थूल, तलभाग, तथा खड़ी हुई शालभंजिका (पुतली) भित्ति और तोरणादिक उनको उत्पत्तिके योग्य देखे जाते हैं।

उपपादगत सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने लोकके कुछ कम ग्यारह बटे चौदह भाग ($\frac{11}{14}$) स्पर्श किए हैं। वह इसप्रकार है — मेरुतलसे नीचे छठी पृथिवी तक पांच राजु होते हैं, ऊपर आरण-अच्युतकल्प तक छह राजु होते हैं तथा इसका आयाम और विस्तार एक राजु है इस प्रकार कुछ कम ग्यारह राजु उपपादक्षेत्रका प्रमाण है।

कितने ही आचार्य ऐसा कहते हैं कि देव नियमसे मूलशरीरमें प्रवेश करके ही मरते हैं। उनके अभिप्रायसे सासादनगुणस्थानवर्ती उपपादसम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्र कुछ कम दस बटे चौदह भाग ($\frac{10}{14}$) प्रमाण होता है। किन्तु यह व्याख्यान यहींपर विग्रहगतिको प्राप्त कार्मणशरीरवाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके उपपाद-स्पर्शनके ग्यारह बटे चौदह ($\frac{11}{14}$) भागके प्ररूपक सूत्रके साथ विरोधको प्राप्त होता है, इसलिए उसे नहीं ग्रहण करना चाहिए और जो ऐसा कहते हैं कि सासादनसम्यग्दृष्टि देव, एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं, उनके अभिप्रायसे कुछ कम बारह बटे चौदह ($\frac{12}{14}$) भाग उपपादका स्पर्शन होता है। किन्तु यह भी व्याख्यान सत्प्ररूपणा और द्रव्यानुयोगद्वारके सूत्रोंके विरुद्ध पड़ता है, इसलिए उसे नहीं ग्रहण करना चाहिए।

१ प्रतिषु 'थूलतलंउभ' इति पाठः।

उववादगदेहि देसूणेक्कारह चोद्दसभागा फोसिदा। तं जहा– हेट्ठा जाव छट्ठी पुढवि त्ति पंच रज्जू, उवरि जाव आरण-अच्चुदकप्पो त्ति छ रज्जू, आयामो वित्थारो च एगरज्जू, एदं उववादखेत्तपमाणं। के वि आइरिया 'देवा णियमेण मूलसरीरं पविसिय मरंति' त्ति भणंति, तेसिमभिप्पाएण दस-चोद्दसभागा देसूणा। एदं वक्खाणमेत्थेव कम्मइयसरीरसासणउववादफोसणस्स एक्कारह-चोद्दसभागपरूवय-सुत्तेण विरुद्धं ति ण घेत्तव्वं। जे पुण देवसासणा एइंदिएसुप्पज्जंति त्ति भणंति, तेसिमभिप्पाएण बारह चोद्दसभागा देसूणा उववादफोसणं होदि[1], एदंपि वक्खाणं संत-दव्वसुत्तविरुद्धं[2] ति ण घेत्तव्वं।

सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[3] ॥ ५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। सम्मामिच्छाइट्ठीहि सत्थाणसत्थाण-विहारवदि-सत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदि-भागो फोसिदो। माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो। कारणं खेत्तभंगो। असंजद-सम्माइट्ठीणं सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगदाण खेत्तम्हि वुत्तत्थो संभरिय[4] वत्तवो।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं–– स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातगत सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। इसका कारण क्षेत्रप्ररूपणाके समान ही जानना चाहिए। स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, वैक्रियिकसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदको प्राप्त असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शन क्षेत्रप्ररूपणामें कहे गये अर्थको स्मरण करके कहना चाहिए।

---

१ अथवा येषां मते सासादन एकेन्द्रियेषु नोत्पद्यते तन्मतापेक्षया द्वादश भागा न दत्ताः।

२ जी. सं. सू. ३६। जी. द सू. ७४–७६.

३ सम्यग्मिथ्यादृष्टयसंयतसम्यग्दृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभागः अष्टौ वा चतुर्दशभागा देशोनाः। स. सि. १, ८.

४ प्रतिषु 'संभविय' इति पाठः।

अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ६ ॥

पुव्वसुत्तादो सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदमिदि अणुवट्टदे । अदीदकालेणेत्ति वयणस्स अज्झाहारो कायव्वो । कुदो ? एदेसिं दोण्हं गुणट्ठाणाणं वट्टमाणकालविसिट्ठखेत्तस्स पुव्वं परूविदत्तादो । सम्मामिच्छादिट्ठीहि सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । एत्थ सत्थाणखेत्तमेलावणविहाणं पुव्वं व कायव्वं । विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । एत्थ देसूण विधाणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

असंजदसम्माइट्ठीहि सत्थाणेण तिण्हं लोगाणम-संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । तिरियलोगस्स संखेज्जदि-भागखेत्तुप्पायणे सासणभंगो । विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-समुग्घादगदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, उवरि छ रज्जू, हेट्ठा दो रज्जु त्ति । उववादगदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, हेट्ठा असंजदसम्माइट्ठीणं उववादखेत्ताणुवलंभादो ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने अतीतकालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ६ ॥

यहांपर पूर्वसूत्रसे 'सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है' इतने पदकी अनुवृत्ति होती है । तथा 'अतीतकालसे' इस वचन का भी अध्याहार करना चाहिए; क्योंकि, दोनों गुणस्थानोंके वर्तमानकालविशिष्ट क्षेत्रका पहले प्ररूपण किया जा चुका है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंने स्वस्थानकी अपेक्षा सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा तथा तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है । यहांपर स्वस्थानक्षेत्रके मिलानेका विधान पूर्ववत् ही करना चाहिए । विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातगत सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह ($\frac{८}{१४}$) भाग स्पर्श किया है । यहांपर देशोनका विधान पूर्वके समानही कहना चाहिए ।

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने स्वस्थानकी अपेक्षा सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र और तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है । तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागरूप क्षेत्रके उत्पन्न करनेमें सासादनगुणस्थानके स्पर्शनके समान ही वर्णन जानना चाहिए । विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, वैक्रियिकसमुद्घात और मारणान्तिकसमुद्घातगत उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने कुछ कम छह बटे चौदह ($\frac{६}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं; क्योंकि, नीचे अर्थात् प्रथम नरकके ऊपरी भागको छोड़कर नीचे असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका उपपादक्षेत्र नहीं पाया जाता है ।

संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ७ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपदाणं पज्जवट्ठियपरूवणा खेत्ततुल्ला ।

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ८ ॥

पुव्वं वट्टमाणकालविसिट्ठखेत्तं परूविदमिदि कट्टु इदं सुत्तमदीदकालसंबंधीदि अवगम्मदे । अणागदकालसंबंधी ण होदि, तेण ववहाराभावादो । अधवा अदीदाणागदकालविसिट्ठखेत्ताणं परूवयाणि पच्छिमसव्वसुत्ताणि त्ति णिच्छओ कायव्वो, उभयत्थ विसेसाभावादो । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि संजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एत्थ सत्थाणसत्थाणखेत्ताणयणविधाणं वुच्चदे—

संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ७ ।।

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, वैक्रियिकसमुद्घात और मारणान्तिकसमुद्घात पदगत संयतासंयतोंकी पर्यायार्थिकनयसम्बन्धी स्पर्शनप्ररूपणा उन्हींकी क्षेत्रप्ररूपणाके तुल्य है ।

संयतासंयत जीवोंने अतीतकालकी अपेक्षा कुछ कम छटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ।। ८ ।।

पूर्वमें वर्तमानकालविशिष्ट क्षेत्रका प्ररूपण किया जा चुका है, इसलिए यह सूत्र अतीतकालसम्बन्धी है, यह बात जानी जाती है । किन्तु यह अनागत (भविष्य) काल सम्बन्धी नहीं है, क्योंकि, उसके साथ व्यवहारका अभाव है । अथवा, पीछेके सभी सूत्र अतीत और अनागतकाल विशिष्ट क्षेत्रोंकी प्ररूपणा करनेवाले हैं, ऐसा निश्चय करना चाहिए, क्योंकि, भूतकाल और भविष्यकालमें स्पर्शनकी अपेक्षा कोई विशेषता नहीं है । स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातगत संयतासंयतोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । अब यहांपर संयतासंयत जीवोंके स्वस्थानस्वस्थानक्षेत्रके निकालनेका विधान कहते हैं—

---

१ संयतासंयतैर्लोकस्यासंख्येयभागः षट् चतुर्दशभागा वा देशोनाः । स. सि. १, ८.

सयंभूरमणसमुद्दविक्खंभो दोहि वि पासेहि सादिरेगमेगरज्जुअद्धपमाणं होदि। सयंपहपव्वदपरभागखेत्तं पि दोहि वि पासेहि एगरज्जु-अट्ठमभागमेत्तविक्खंभो होदि। तं दो वि मेलिदे पंचट्ठभागा होंति। एदे रज्जुविक्खंभम्हि अवणिदे तिण्णि अट्ठभागा होंति। एदम्हि खेत्ते सुज्जमंडलागारेण संट्ठिदे भोगभूमिपडिभागे णत्थि संजदासंजदा। बाहिरिल्लएसु पंचसु अट्ठभागेसु अड्ढाइज्जदीवेसु दोसु समुद्देसु च अत्थि, कम्मभूमित्तादो। 'व्यासार्धकृतित्रिकं समस्तफलमिति' एदेण सुत्तेण मज्झिल्लखेत्त-फलमाणिदे सोलस-सत्तावीसभागब्भहियचदुसट्ठि-चदुसदरूवेहि जगपदरे भागे हिदे एगभागो आगच्छदि। तं रज्जुपदरम्हि अवणिय संखेज्जंगुलेहि गुणिदे संजदासंजद-सत्थाणखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं होदि। सेसपदाणं खेत्तमाणिज्जमाणे

स्वयम्भूरमणसमुद्रका विष्कम्भ दोनों ही पार्श्व भागोंकी अपेक्षा एक राजुका साधिक अर्धप्रमाण है। स्वयंप्रभपर्वतका परभागवर्ती क्षेत्र भी दोनों ही पार्श्व भागोंकी अपेक्षा एक राजुके अष्टमभागमात्र विष्कम्भवाला है। ये दोनों ही विष्कम्भ मिला देनेपर एक राजुके आठ भागोंमेंसे पांच भाग प्रमाण ($\frac{५}{८}$) क्षेत्र हो जाता है। ये पांच बटे आठ ($\frac{५}{८}$) भाग राजुके विष्कम्भमेंसे निकाल देनेपर तीन बटे आठ ($\frac{३}{८}$) भाग अवशिष्ट रहते हैं। इस तीन बटे आठ ($\frac{३}{८}$) भागवाले सूर्यमंडलके आकारसे संस्थित और भोगभूमिसे प्रतिबद्ध क्षेत्रमें संयतासंयत जीव नहीं होते हैं। किन्तु बाहरी पांच बटे आठ ($\frac{५}{८}$) भागोंमें जम्बूद्वीप घातकीखंड और पुष्करार्ध इन अढ़ाई द्वीपोंमें और लवणोदधि वा कालोदधि इन दो समुद्रोंमें संयतासंयत जीव रहते हैं; क्योंकि, वहां पर कर्मभूमि है। 'व्यासके आधेका वर्ग करके उसका तिगुना कर देनेसे विवक्षित क्षेत्रका समस्त क्षेत्रफल निकल आता है' इस करणसूत्रसे मध्यवर्ती अर्थात् भोगभूमि-प्रतिबद्ध क्षेत्रका क्षेत्रफल निकालनेपर जो प्रमाण आता है वह सोलह बटे सत्ताईस भागसे अधिक चारसौ चौसठ ४६४($\frac{१६}{२७}$) रूपोंसे जगत्प्रतरमें भाग देनेपर उपलब्ध एक भागके बराबर होता है।

उदाहरण– मध्यम क्षेत्रफलका व्यास $\frac{३}{८}$; $३ \left(\frac{३}{८} \times \frac{१}{२}^{२}\right) = \frac{२७}{२५६}$

$$व \frac{७^{१}}{४६४\frac{२७}{१६}} = \frac{१३२३}{१२५४४} = \frac{२७}{२५६} \text{ जगत्प्रतर}$$

यह स्वयंप्रभाचलके आभ्यन्तर भागवर्ती मध्यमक्षेत्रका क्षेत्रफल है।

इसे एक राजुप्रतरमेंसे निकालकर संख्यात अंगुलोंसे गुणा करनेपर तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण संयतासंयतोंका स्वस्थानक्षेत्र हो जाता है। विहारवत्स्वस्थानादि शेष पदोंका क्षेत्र निकालनेपर— एक जगत्प्रतरको स्थापित करके संयतासंयत जीवोंके शरीरकी ऊंचाईके उनंचास भागमात्र संख्यात सूच्यंगुलोंसे गुणा करनेपर तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमात्र क्षेत्र होता है।

शंका— मानुषोत्तरपर्वतसे परभागवर्ती और स्वयंप्रभाचलसे पूर्वभागवर्ती शेष द्वीप-समुद्रोंमें संयतासंयत जीवोंकी संभावना कैसे है?

एगं जगपदरं ठविय संखेज्जसूचिअंगुलेहि संजदासंजदउस्सेधस्स एगूणवंचासभागमेत्तेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तखेत्तं होदि । कधं संजदासंजदाणं सेसदीव-समुद्देसु संभवो ? ण, पुव्ववेरियदेवेहि तत्थ घित्ताणं संभवं पडि विरोधाभावा । कधमेसो अत्थो सुत्तेण अकहिदो अवगम्मदे ? ण एस दोसो, सुत्तट्ठिएण 'वा' सद्देण अवुत्तसमुच्चयट्ठेण सूचिदत्तादो । मारणंतियसमुग्घादगदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । कुदो ? सव्वत्थ लोगणालीए अब्भंतरे अच्छिय मारणंतियकरणं पडि विरोहाभावादो । केण ऊणा छ चोद्दसभागा ? हेट्ठिमेण जोयणसहस्सेण आरणच्चुद-विमाणाणमुवरिमभागेण च ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ९ ॥

दव्वट्ठियणयमस्सिदूण भण्णमाणे अदीद-वट्टमाणकालेसु 'लोगस्स असंखेज्जदि-भागो' इदि होदि । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । वट्टमाणकाल-मस्सिदूण पज्जवट्ठियणयपरूवणाए खेत्तभंगो । संपदि अदीदकालमस्सिदूण पज्जवट्ठिय

समाधान— नहीं, क्योंकि, पूर्वभवके वैरी देवोंके द्वारा वहां ले जाये गये तिर्यंच संयतासंयत जीवोंकी संभावनाकी अपेक्षा कोई विरोध नहीं है।

शंका— सूत्रसे नहीं कहा गया यह अर्थ कैसे जाना जाता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, सूत्रमें स्थित और अनुक्तका अर्थात् नहीं कहे गये अर्थका समुच्चय करनेवाले 'वा' शब्दसे उक्त अकथित अर्थ सूचित किया गया है ।

मारणान्तिकसमुद्घातगत संयतासंयत जीवोंने कुछ कम छह बटे चौवह ($\frac{6}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं; क्योंकि, लोकनालीके भीतर सर्वत्र रहकर मारणान्तिकसमुद्घात करनेके प्रति कोई विरोध नहीं है ।

शंका— यहांपर यह छह बटे चौवह ($\frac{6}{14}$) भाग किस क्षेत्रसे कम करना चाहिए ?

समाधान— चित्रा पृथिवीसम्बन्धी नीचेके एक हजार योजनसे और आरण-अच्युत विमानोंके उपरिम भागसे कम करना चाहिए ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ९ ॥

इन जीवोंका द्रव्यार्थिकनयका आश्रय लेकर स्पर्शनक्षेत्रके कहनेपर अतीत और वर्तमानकालमें लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण ही स्पर्शनका क्षेत्र होता है । किन्तु पर्यायार्थिक-

---

१ प्रमत्तसंयतादीनामयोगकेवल्यन्तानां क्षेत्रवत्स्पर्शनम् । स. सि. १, ८.

परूवणा कीरदे । तं जधा– सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-तेजाहारसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो। विउव्वणादिइड्ढिपत्तेहि माणुसखेत्तब्भंतरे अप्पडिहयगमणेहि रिसीहि अदीदकाले सव्वं पि माणुसखेत्तं फुसिज्जदि त्ति 'माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो' इदि वयणं ण घडदे ? ण एस दोसो, उवरि जोयणलक्खमेत्तगमणे संभवाभावादो। मेरुमत्थयचढणसमत्थाणमिसीणं किमिदि जोयणलक्खुप्पायणे ण संभवो ? होदु णाम मेरुपव्वदुद्देसे[1] सा सत्ती, ण सव्वत्थ, 'माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे' इति आइरिय-वयणण्णहाणुववत्तीदो। अथवा अदीदकाले लद्धिसंपण्णमुणिवरेहि सव्वं पि माणुसखेत्तं फुसिज्जदि, तस्स माणुसखेत्तववएसण्णहाणुववत्तीदो। सत्थाणे पुण माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो चेव फोसिदो। जदि एवं, तो पंचिंदियतिरिक्खाणं पि पुव्ववेरियदेवाणं

नयका अवलम्बन करनेपर कुछ विशेषता है। उनमेंसे वर्तमानकालका आश्रय करके पर्यायार्थिक-नयसम्बन्धी स्पर्शनप्ररूपणा करनेपर क्षेत्रप्ररूपणाके समान ही स्पर्शनका क्षेत्र है। अब अतीत-कालका आश्रय लेकर पर्यायार्थिकनयसम्बन्धी स्पर्शनकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है– स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, वैक्रियिकसमुद्घात, तैजससमुद्घात और आहारकसमुद्घातगत प्रमत्तसंयतादि गुणस्थानवर्ती जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है और मनुष्य क्षेत्रका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है।

शंका– मानुषक्षेत्रके भीतर अप्रतिहत गमनशील विक्रियादि ऋद्धिप्राप्त ऋषियोंने अतीतकालमें सम्पूर्ण मानुषक्षेत्र स्पर्श किया है, इसलिए 'मनुष्यक्षेत्रका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है' यह वचन घटित नहीं होता है ?

समाधान– यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, उतने ऊपर एक लाख योजन प्रमाण गमन करनेकी संभावना नहीं है।

शंका– सुमेरुपर्वतके मस्तक (शिखर) पर चढ़नेमें समर्थ ऋषियोंके एक लाख योजन ऊपर गमन करनेकी संभावना क्यों नहीं है ?

शंका– सुमेरुपर्वतके ऊर्ध्वप्रदेशमें ऋषियोंके गमन करनेकी वह शक्ति भलेहीं होवे, किन्तु मानुषक्षेत्रके भीतर एक लाख योजन उपर जानेकी वह शक्ति सर्वत्र नहीं है, अन्यथा 'मनुष्यक्षेत्रके संख्यातवें भागमें' ऐसा आचार्योंका वचन नहीं बन सकता है।

अथवा, अतीतकालमें विक्रियादि लब्धिसम्पन्न मुनिवरोंने सर्व ही मनुष्यक्षेत्र स्पर्श किया है अन्यथा उसका 'मनुष्यक्षेत्र' यह नाम नहीं बन सकता है।

स्वस्थानस्वस्थानकी अपेक्षा उक्त प्रमत्तादि संयतोंने मनुष्यक्षेत्रका संख्यातवां भाग ही स्पर्श किया है।

---

१ म १ -प्रतौ 'दुद्धेसणसत्ती', म २ प्रतौ अन्यप्रतिषु च '-दुद्धेसे सा सत्ती' इति पाठः।

पयोगादो जोयणलक्खुप्पायणं पावदि ? होदु, ण को वि[1] दोसो। मारणंतियसमुग्घादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो फोसिदो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो। मारणंतियखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, तदो संखेज्जगुणमसंखेज्जगुणं वा किण्ण होदि त्ति वुत्ते ण होदि। ण ताव उड्डवट्टाए[2] पणदालीसजोयणलक्खविक्खंभाए[2] समपरिमंडलसंट्ठिदाए[2] सत्तरज्जुआयदाए[2] खेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि, संखेज्जपदरंगुलमेत्तसेढिपमाणत्तादो। ण च पणदालीसजोयणलक्खविक्खंभसंखेज्जंगुलबाहल्लं संखेज्जरज्जुआयदकप्पवासियविमाणमेत्ततिरिच्छवट्टाणं खेत्तं पि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि, एदस्स पुव्वखेत्तादो संखेज्जगुणहीणस्स तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तविरोधा। विमाणपडिट्ठिदअसंखेज्जुववादभवणसम्मुहवट्टखेत्तेसु समुदिदेसु किण्ण तं होइ ? ण, सेढीए असंखेज्जदिभागासंखेज्जजोयणरुंदयखेत्तेसु[3] गहिदेसु वि तदसंभवादो।

शंका— यदि ऐसा है, तो पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंका भी पूर्वभवके वैरी देवोंके प्रयोगसे एक लाख योजन ऊपर तक जाना प्राप्त होता है ?

समाधान— यदि तिर्यंचोंका ऊपर एक लाख योजन तक जाना प्राप्त होता है, तो होवे, उसमें भी कोई दोष नहीं है।

मारणान्तिकसमुद्घातगत उन्हीं प्रमत्तसंयतादिकोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है।

शंका— मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त प्रमत्तसंयतादि गुणस्थानवर्ती जीवोंका मारणान्तिक क्षेत्र तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा अथवा असंख्यातगुणा क्यों नहीं होता है ?

समाधान— नहीं होता है, क्योंकि, उसके ऊर्ध्ववृत्त पैंतालीस लाख योजन विष्कम्भवाले, समपरिमंडल आकारसे संस्थित और सात राजु आयत होनेपर वह क्षेत्र तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग नहीं होता है, क्योंकि, वह क्षेत्र संख्यात प्रतरांगुलमात्र जगश्रेणी प्रमाण है और न संख्यात राजु आयत, तथा कल्पवासी विमानोंके प्रमाण तिर्यग्रूपसे प्रवर्तमान उक्त जीवोंका पैंतालीस लाख योजन विस्तार और संख्यात अंगुल बाहल्यवाला मारणान्तिकक्षेत्र भी तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग होता है, क्योंकि, पूर्वोक्त क्षेत्रसे संख्यातगुणे हीन इस क्षेत्रको तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग माननेमें विरोध आता है।

शंका— विमानोंमें प्रतिष्ठित असंख्यात उपपादशय्यावाले भवनोंके सन्मुख प्रवर्तमान उक्त जीवोंके समस्त मारणान्तिकक्षेत्र संयुक्त करने पर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग क्यों नहीं हो जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, श्रेणीके असंख्यातवें भाग तथा असंख्यात योजन विस्तृत क्षेत्रोंके ग्रहण करने पर भी तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग प्राप्त होना असंभव है।

---

१ म प्रतौ 'को छि', अन्यप्रतिषु 'को त्थि' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'णं' स्थाने 'ए' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'रुंदपंथ' इति पाठः।

सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जा वा भागा, सव्वलोगो वा ॥ १० ॥

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणकालमस्सिदूण पज्जवट्ठियपरूवणाए खेत्तभंगो। अदीदकालमस्सिदूण पज्जवट्ठियपरूवणाए वि खेत्तभंगो चेव। णवरि कवाडगदस्स पणदालीसजोयणसदसहस्सबाहल्लं जगपदरमेगं कवाडखेत्तं होदि। अवरं णवदिजोयणसदसहस्सबाहल्लं जगपदरं होदि। एवं दोण्णि कवाडखेत्ताणि मेलिदे तिरियलोगादो संखेज्जगुणाणि।

(एवमोघपरूवणा समत्ता)

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ११ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादगदेहि मिच्छादिट्ठीहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो वट्टमाणकाले फोसिदो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो। सेसं खेत्तभंगो।

सयोगकेवली भगवन्तोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवा भाग, असंख्यात बहुभाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ १० ॥

इस सूत्रकी वर्तमानकालको आश्रय करके पर्यायार्थिकनयसम्बन्धी स्पर्शकी प्ररूपणा भी क्षेत्रके समान है। अतीतकालको आश्रय करके पर्यायार्थिकनयसम्बन्धी प्ररूपणा भी क्षेत्रके समान ही है। विशेष बात यह है कि कपाटसमुद्घातगत स्पर्शनक्षेत्र पैंतालीस लाख योजन बाहल्यवाला एक जगत्प्रतरप्रमाण कपाटक्षेत्र होता है। (यह कायोत्सर्गस्थ केवलीकी अपेक्षा जानना)। और दूसरा अर्थात् समुपविष्ट केवलीके कपाटसमुद्घातका क्षेत्र नव्वै लाख योजन बाहल्यवाले जगत्प्रतरप्रमाण कपाट समुद्घातसम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्र होता है। इस प्रकार दोनों कपाटक्षेत्रोंको मिला देनेपर तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा क्षेत्र हो जाता है।

(इस प्रकार ओघप्ररूपणा समाप्त हुई।)

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ११ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, वैक्रियिकसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदगत मिथ्यादृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र वर्तमानकालमें स्पर्श किया है। शेष कथन क्षेत्रप्ररूपणाके समान जानना चाहिए।

---

१ विशेषेण गत्यनुवादेन नरकगतौ प्रथमायां पृथिव्यां नारकैश्चतुर्गुणस्थानैर्लोकस्यासंख्येयभाग स्पृष्टः। स. सि. १, ८.

छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १२ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि मिच्छादिट्ठीहि अदीदकाले णेरइएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एसो अत्थो सुत्ते अवुत्तो कधं परूविज्जदे ? ण, सुत्तत्थेण 'वा' सद्देण समुच्चयट्ठेण सूचिदत्तादो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-खेत्ताणि अदीदकाले तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि किण्ण होंति त्ति वुत्ते ण होंति, इंदय[1]-सेढीबद्ध-पइण्णएहि रुद्धसव्वखेत्तस्स तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागत्तादो। इंदय[1]-सेढीबद्ध पइण्णएसु संचरंतेहि णेरइयमिच्छाइट्ठीहि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो किण्ण फुसिज्जदि त्ति वुत्ते ण फुसिज्जदि, णेरइयाणं परक्खेत्तगमणाभावादो। परक्खेत्तगमणाभावे विहारवदिसत्थाणस्स अभावो पसज्जदि त्ति वुत्ते ण पसज्जदे,

---

नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीतकालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ १२ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातगत मिथ्यादृष्टि नारकी जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्र से असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है।

शंका– सूत्रमें नहीं कहा गया यह अर्थ कैसे कहा जा रहा है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, सूत्रमें स्थित और समुच्चयार्थक 'वा' शब्दसे उक्त अर्थ सूचित किया गया है।

शंका– अतीतकालकी अपेक्षा नारकी मिथ्यादृष्टियोंके विहारवत्स्वस्थान वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातसम्बन्धी क्षेत्र तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमात्र क्यों नहीं होते हैं ?

समाधान– नहीं होते हैं, क्योंकि, इन्द्रक, श्रेणीबद्ध और प्रकीर्णक नरकबिलोंसे रुद्ध सर्वक्षेत्र तिर्यग्लोकका असंख्यातवा भागमात्र ही होता है।

शंका– इन्द्रक, श्रेणीबद्ध और प्रकीर्णक नरकोंमें संचार करनेवाले नारकी मिथ्यादृष्टियोंमें तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग क्यों नहीं स्पर्श किया ?

समाधान– नहीं स्पर्श किया है, क्योंकि, नारकियोंका स्वक्षेत्रको छोड़कर परक्षेत्रमें गमन नहीं होता है।

शंका– नारकियोंका परक्षेत्रमें गमनका अभाव माननेपर विहारवत्स्वस्थानका अभाव प्राप्त होता है ?

---

१ प्रतिषु 'इंदिय' इति पाठः।

एक्कम्हि इंदए सेढीबद्धे पइण्णए च संट्ठिदगामागारबहुविधबिलगमणसंभवादो। असंखेज्जजोयणमेत्तायामसेढीबद्ध-पइण्णया अत्थि त्ति तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि त्ति णासंकणिज्जं, असंखेज्जजोयणायामसेढीबद्ध-पइण्णयाणं पि तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागत्तादो। मारणंतिय-उववादपदेहि णेरइयमिच्छादिट्ठीहि अदीदकाले छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। ऊणपमाणं देसूणतिण्णिजोयणसहस्सं। तिरिक्ख-णेरइयाणं सव्वदिसासु गमणागमणसंभवो अत्थि त्ति छ चोद्दसभागा होंति, कधं देसूणत्तं? वुच्चदे- विग्गहो जीवाण किं सहेउओ, आहो अहेउओ त्ति? ण ताव अहेउओ, णिक्कारणकज्जाणुवलंभादो। विदिये कारणं वत्तव्वमिदि। कम्मं तक्कारणं, संसारिजीवसव्वावत्थाणं कम्मवदिरित्तकारणाणुवलंभादो। तत्थ वि

समाधान- विहारवत्स्वस्थानका अभाव नहीं प्राप्त होता है, क्योंकि, एक ही इन्द्रक, श्रेणीबद्ध या प्रकीर्णक नरकमें विद्यमान ग्रामोंके आकारवाले बहुत प्रकारके बिलोंमें गमन सम्भव होनेसे विहारवत्स्वस्थानपद बन जाता है।

शंका- असंख्यात योजनप्रमाण आयामवाले श्रेणीबद्ध और प्रकीर्णक नरक होते हैं, इसलिए तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग विहारवत्स्वस्थानका क्षेत्र बन जाता है।

समाधान- ऐसी भी आशंका नहीं करना चाहिए, क्योंकि, असंख्यात योजन आयामवाले श्रेणीबद्ध और प्रकीर्णक नरक भी तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागमात्र ही होते हैं।

मारणान्तिकसमुद्धात और उपपादपदवाले नारकी मिथ्यादृष्टियोंने अतीतकालमें कुछ कम छह बटे चौदह ($\frac{6}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। यहांपर कुछ कमका प्रमाण देशोन तीन हजार योजन है।

शंका- तिर्यंच और नारकियोंका सर्व दिशाओंमें गमनागमन सम्भव है, इसलिए उक्त नारकियोंका पूरे छह बटे चौदह ($\frac{6}{14}$) भाग ही स्पर्शन क्षेत्र होना चाहिए, फिर कुछ कम कैसे कहा?

समाधान- विग्रहगतिमें जीवोंके विग्रह क्या सहेतुक होते हैं, अथवा अहेतुक? अहेतुक तो माने नहीं जा सकते हैं, क्योंकि, बिना कारणके कार्य पाया नहीं जाता। यदि दूसरा पक्ष ग्रहण किया जाता है, अर्थात् विग्रह सहेतुक होते हैं, तो उसमें कारण कहना चाहिए? विग्रहका कारण कर्म है, क्योंकि, संसारी जीवोंकी सर्व अवस्थाओंका कर्मको छोड़कर और कोई कारण पाया नहीं जाता है। उसमें भी आनुपूर्वीनामक नामकर्म ही विग्रहका कारण है; क्योंकि, अन्य सभी प्रकृतियोंके पृथक् पृथक् कार्य पाये जाते हैं, तथा पूर्वशरीरको छोड़नेके पश्चात् और उत्तरशरीरको ग्रहण करनेके पूर्व अन्तरालवर्ती क्षेत्रमें आनुपूर्वीनामकर्मका विपाक (उदय) होता है, ऐसा गुरुका उपदेश है। यदि कोई ऐसी आशंका करे कि आनुपूर्वीनामकर्मके उदयके नहीं होनेपर भी मारणान्तिकसमुद्धात करनेवाले जीवोंके विग्रह पाये जाते हैं, इसलिए

आणुपुव्विणामं चेव कारणं, अण्णासिं सव्वपयडीणं पुध पुध कज्जाणमुवलंभादो, पुव्वुत्तरसरीराणमंतरालखेत्ते आणुपुव्वीए विवागो होदि त्ति गुरूवदेसादो वा। आणुपुव्विउदयाभावे वि मुक्कमारणंतियजीवाणं वक्कस्सुवलंभादो णाणुपुव्विफलं विग्गहो त्ति णासंकणिज्जं, तस्स तित्थयरस्सेव पच्चासण्णविवागाणुपुव्विफलत्तादो। अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबाहल्लतिरियपदरम्हि सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्तओगाहणवियप्पेहि गुणिदे तत्थ जत्तिओ रासी तत्तियमेत्ताओ णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीए पयडीओ। लोगे सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्तओगाहणवियप्पेहि गुणिदे तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए पयडिवियप्पा होंति। पणदालीसजोयणलक्खबाहल्ले तिरियपदरे उड्ढं कवाडछेदणयणिप्पण्णे[1] सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्तओगाहणवियप्पेहि गुणिदे मणुसगदि-

---

विग्रह आनुपूर्वीनामकर्मका फल है, ऐसा नहीं माना जा सकता है सो उसे ऐसी आशंका नहीं करना चाहिए, क्योंकि, वह विग्रह तीर्थंकरप्रकृतिके समान निकट भविष्यमें उदय होनेवाले आनुपूर्वीनामकर्मका फल है।

यदि कोई ऐसी आशंका करे कि सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र बाहल्यवाले तिर्यग्प्रतरमें अर्थात् राजुके वर्गमें जगत्श्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र अवगाहनाके भेदोंसे गुणा करनेपर वहां जो राशि अर्थात् आकाश प्रदेशोंकी संख्या आती है उतने प्रमाण नरकगति प्रायोग्यानुपूर्वीकी प्रकृतियां होती हैं। घनलोकमें जगत्श्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र अवगाहनाके भेदोंसे गुणा करनेपर तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीके प्रकृति-विकल्प होते हैं। ऊर्ध्वकपाटके छेदनसे निष्पन्न पैंतालीस लाख योजन बाहल्यवाले तिर्यग्प्रतरमें जगत्श्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र अवगाहन-विकल्पोंसे गुणा करनेपर मनुष्यगति-प्रायोग्यानुपूर्वीके प्रकृति-विकल्प होते हैं। सौ सौ योजन बाहल्यवाले तिर्यग्प्रतरमें जगत्श्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र अवगाहन-विकल्पोंसे गुणा

---

१ एदाणि पणदालीसजोयणसदसहस्सबाहल्लराणि तिरियपदराणि कधमुप्पण्णाणि त्ति भणिदे वुच्चदे– उड्ढं कवाडच्छेदणणिप्पण्णाणि त्ति इदरेसिमाणुपुव्विकम्माणं तिरियपदराणं घणलोगस्स य उप्पत्तिपरूविय एदेसिं चेव तिरियपदराणमुप्पत्ती किमट्ठं परूविज्जदे ? लोगसंठाणपरूवणट्ठं ; उड्ढकवाडमिदि एदेण लोगो णिद्दिट्ठो। कधमेसा लोगस्स सण्णा ? वुच्चदे– ऊर्ध्वं च तत् कपाटं च ऊर्ध्वकपाटमिव लोकः। ऊर्ध्वकपाटं जेण लोगो चोद्दसरज्जुउस्सेहो सत्तरज्जुरुंदो मज्झे उवरिमपेरंतो च एगरज्जुबाहल्लो उवरि बह्मलोगुद्देसे पंचरज्जुबाहल्लो मूले सत्तरज्जुबाहल्लो; अण्णत्थ जहाणुवड्ढी बाहल्लो ; तेण उड्ढट्ठियकवाडोवमो। उड्ढकवाडस्स छेदणं उड्ढकवाडछेदणं तेण उड्ढकवाडछेदणेण णिप्पण्णाणि एदाणि पणदालीसजोयणसदसहस्स-बाहल्लतिरियपदराणि। संपहि एत्थ उड्ढकवाडछेदणविहाणं वुच्चदे। तं जहा–– सत्तरज्जुरुंदत्तम्मि दोसु वि पासेसु तिण्णि तिण्णिरज्जुआयामेण एगरज्जुविक्खंभेण उड्ढकवाडं छेत्तव्वं। पुणो पणदालीसजोयणलक्खुस्सेहं मोत्तूण हेट्ठा उवरि च मज्झिमपदेसे उड्ढकवाडं छिंदिदव्वं। पुणो मुह १ भूमि ५ विसेसा ४ उच्छेह $\frac{७}{२}$ भजिदो वड्ढिपमाणं होदि $\frac{८}{७}$। एदीए वड्ढीए पणदालीसजोयणलक्खेसु वड्ढिदखेत्तं दोसु वि पासेसु अवणेदव्वं। एवमुड्ढकवाडछेदणेण पणदालीसजोयणसदसहस्सबाहल्लाणि तिरियपदराणि णिप्पण्णाणि। धवला अ. प्र. पत्र १२०६ (वर्गणाखंड)

पाओग्गाणुपुव्वीए पयडिवियप्पा होंति । णवजोयणसदबाहल्लतिरियपदरे सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्तओगाहणवियप्पेहि गुणिदे देवगदिपाओग्गाणुपुव्वीए पयडिवियप्पा-होंति त्ति वग्गणसुत्तादो आणुपुव्विणामं संठाणविवाई चेवेत्ति णासंकणिज्जं, तिस्से खेत्त-संठाणेसु वावादाए एकत्थेव वावारविरोहादो । ते च आगासपदेसा एत्थ चेव अच्छंति त्ति ण णियमो अत्थि, समयाविरोहेण तेसिमवट्ठाणादो । तदो णाणुपुव्वि-विवागापाओग्गखेत्ते अवट्ठाणं उप्पण्णपढम-विदिय-तदियवंकेसु णत्थि त्ति देसूणत्तं घडदे । एसो अत्थो उवरि सव्वत्थ जहावसरं परूवेदव्वो ।

सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १३ ॥

एदस्स सुत्तस अत्थो खेत्ताणिओगद्दारे जो वुत्तो, सो वत्तव्वो ।

पंच चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १४ ॥

करनेपर देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके प्रकृति-विकल्प होते हैं । इन वर्गणाखंडके सूत्रोंके अनुसार आनुपूर्वीनामक नामकर्म संस्थान विपाकी ही है । तो उसे ऐसी भी आशंका नहीं करनी चाहिए, क्योंकि, क्षेत्र और संस्थानमें व्यापृत अर्थात् क्षेत्रविपाकी और पुद्गलविपाकी होते हुए भी उस आनुपूर्वीप्रकृतिका एक ही अर्थमें व्यापार मान लेनेमें विरोध है । दूसरी बात यह भी है कि वे आकाशके प्रदेशके इसी स्थान विशेषपर होते हैं, ऐसा नियम नहीं है, क्योंकि, उनका अवस्थान परमागमके अविरोधसे माना गया है । इसलिए आनुपूर्वीनामकर्मके उदयके अप्रायोग्य क्षेत्रमें उत्पन्न होनेके प्रथम, द्वितीय और तृतीय विग्रहोंमें अवस्थान नहीं है, अतः देशोनता घटित हो जाती है । यह अर्थ ऊपर आगे सर्वत्र यथावसार कहना चाहिए ।

सासादनसम्यग्दृष्टि नारकियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १३ ॥

इस सूत्रका अर्थ जो क्षेत्रानुयोगद्वारमें कहा है वही यहांपर कहना चाहिए ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि नारकियोंने अतीतकालकी अपेक्षा कुछ कम पांच बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ १४ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिक-समुद्घातगत सासादनसम्यग्दृष्टि नारकियोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । वह इस प्रकारसे है– नारकियोंके बिल संख्यात योजन विस्तृत भी हैं और असंख्यात योजन विस्तृत भी हैं । उनमें नारकियोंके चौरासी लाख आवास यदि असंख्यात योजन विस्तृत भी होते हैं, तो भी उन समस्त नारका-वासोंके क्षेत्रका योग तिर्यग्लोकका असंख्यातवां भाग जिस प्रकारसे होता है, उस प्रकारसे कहते हैं–

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि सासणसम्मादिट्ठीहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो। तं जधा– णेरइयाणं बिलाणि संखेज्जजोयणवित्थडाणि वि अत्थि, असंखेज्जजोयणवित्थडाणि वि। तत्थ जदि वि चदुरासीदिलक्खणेरइयावासा असंखेज्जजोयणवित्थडा होंति, तो वि सव्वखेत्तसमासो तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो चेव जधा होदि, तधा वत्तइस्सामो णिरयावासा के वि परिमंडलायारा, के वि चउरंसा, के वि तंसा, के वि पंचंसा, के वि छंसा। एदे सव्वे वि समीकरणे कदे चउरंसा असंखेज्जजोयणवित्थडा होंति। सयलणेरइयरासिणा घणंगुलस्स संखेज्जदिभागे गुणिदे वट्टमाणकाले णेरइएहि रुद्धखेत्तं होदि। वट्टमाणे णेरइयरुद्धणिरयविलभागादो अरुद्धभागो संखेज्जगुणो त्ति संखेज्जरूवेहि गुणिदे णेरइयाणमदीदसत्थाणखेत्तं होदि। तेण तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागत्तं ण विरुज्झदे। एवं 'वा' सद्दसूचिदस्स अत्थस्स परूवणा कदा होदि। सासणस्स णिरयगदीए उववादो णत्थि, सुत्तपडिसिद्धत्तादो। मारणंतियसमुग्घादगदेहि देसूणा पंच चोद्दसभागा फोसिदा। कुदो ? सत्तमपुढवीदो सासणाणं मारणंतियकरणसंभवाभावा। तं कुदो णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो णव्वदे।

नारकियोंके आवास कितने ही तो गोल आकारवाले होते हैं, कितने ही त्रिकोण, कितने ही चतुष्कोण, कितने ही पंचकोण और कितने ही नारकावास षट्कोण होते हैं। इन सभी आकारोंवाले नारकावासोंके समीकरण करनेपर वे चतुरस्र और असंख्यात योजन विस्तृत हो जाते हैं। उसमेंसे, सम्पूर्ण नारकराशिसे घनांगुलके संख्यातवें भागको गुणित करनेपर प्राप्त हुआ क्षेत्र वर्तमानकालमें नारकियोंसे रुद्ध-क्षेत्र होता है। तथा वर्तमानकालमें नारकोंद्वारा रोके हुए नरकोंके बिल-भागसे अरुद्धभाग संख्यातगुणा होता है, इसलिए नारकियोंद्वारा रुद्ध क्षेत्रको संख्यात रूपोंसे गुणा करनेपर नारकोंका अतीतकालसम्बन्धी स्वस्थानक्षेत्रका प्रमाण हो जाता है। अतः तिर्यग्लोकका असंख्यातवां भाग (जो ऊपर स्पर्शन-क्षेत्र बताया गया है, वह) विरोधको नहीं प्राप्त होता है। इस प्रकार 'वा' शब्दसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा की गई है।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवका नरकगतिमें उपपाद नहीं होता है, क्योंकि, उसका सूत्रमें प्रतिषेध किया गया है। मारणान्तिकसमुद्घातगत सासादनसम्यग्दृष्टियोंने कुछ कम पांच बटे चौदह ($\frac{5}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, सातवीं पृथिवीके नारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका मारणान्तिकसमुद्घात करना संभव नहीं है।

शंका– यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान– इसी सूत्रसे जाना जाता है कि सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि नारकी मारणान्तिकसमुद्घात नहीं करते। (यदि करते होते, तो सूत्रमें छह बटे चौदह ($\frac{6}{14}$) भागके स्पर्शका उल्लेख होता)।

सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १५ ॥

सत्थाण-सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदेहि सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि वट्टमाणकाले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कारणं खेत्तसिद्धं । अदीदकाले वि एदेहि दोहि वि गुणट्ठाणेहि एदेहि पदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो चेव फोसिदो, 'असंखेज्जजोयणवित्थडा णेरइयसव्वावासा' इदि मणेण संकप्पिय एगावासखेत्तफलं चउरासीदिलक्खरूवेहि गुणिदे तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तखेत्तफलोवलंभादो । सम्मामिच्छाइट्ठीणं मारणंतिय-उववादपदा णत्थि । असंजदसम्माइट्ठीहि मारणंतिय-उववादगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो वट्टमाणकाले फोसिदो । कारणं खेत्तसिद्धं । अदीदकाले मारणंतियसमुग्घादगदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि चतुण्हं लोगाणमसंज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? सव्वजीवाणं अवक्कमछक्कणियमदंसणादो, उड्ढं गच्छमाणजीवाणं वि अप्पणो

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातगत सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि नारकी जीवोंने वर्तमानकालमें सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । इसका कारण क्षेत्रप्ररूप्रणासे सिद्ध है । अतीतकालमें भी इन दोनों ही गुणस्थानवर्ती नारकी जीवोंने इन्हीं पदोंकी अपेक्षा सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग ही स्पर्श किया है, क्योंकि, नारकियोंके आवास 'असंख्यात योजन विस्तृत होते हैं' इस प्रकार मनसे संकल्प करके एक नारकावासके क्षेत्रफलको चौरासी लाख रूपोंसे गुणित करनेपर तिर्यग्लोकका असंख्यातवां भागमात्र क्षेत्रफल पाया जाता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकियोंके मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद, ये दो पद नहीं होते हैं । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादगत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र वर्तमानकालमें स्पर्श किया है । इसका कारण क्षेत्रप्ररूपणासे सिद्ध है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि नारकी जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १५ ॥

अतीतकालमें मारणान्तिकसमुद्घातगत असंयतसम्यग्दृष्टियोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, सर्व जीवोंके अपक्रमषट्कका नियम देखा जाता है (देखो भाग १ पृ. १०१) । तथा ऊपर

उप्पत्तिखेत्तमपावेदूण अंतरकाले चेव दिस-विदिसाणं गमणाभावादो । ण च उप्पत्ति-खेत्तसमाणखेत्तंतरट्ठियाणं पि जीवाणमणियदगमणमत्थि, एगदिसाए णियदगमणादो; तिरिच्छं गच्छमाणाणं पि जीवाणमप्पणो उप्पज्जमाणदिसं मोत्तूण अण्णदिसाणं गमणाभावादो, उप्पज्जमाणदिसं गच्छंताणं पि जीवाणं अप्पणो उप्पज्जमाणखेत्तस-माणट्ठाणमपावेदूण सव्वत्थ अंतराले [1]उड्डवलणाभावादो । तदो सव्वणिरयावासेहिंतो माणुसखेत्तमागच्छंताणं सम्मादिट्ठीणं णिरयावासप्पडिट्ठिदपडिणियदवट्टाणं फोसणं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो चेव । अधवा णेरइयसम्मादिट्ठीणं तत्थतण-मिच्छाइट्ठीणं व ण घणरज्जुपदरसव्वागासपदेसेहिंतो णिग्गमणमत्थि, माणुसो-ववादियत्तादो, णेरइयपडिबद्धाणं मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं तिरिक्खगइपाओग्गाणु-पुव्वीणं व पडिबद्धागासपदेसाणं रज्जुपदरम्हि सव्वत्थाभावादो । किं तदभावलिंगम् ? एदं चेव फोसणसुत्तं । समीकरणे कदे जदि एक्कणेरइयावासविक्खंभो एगसेढि सेढिविदियवग्गमूलेण खंडियमेत्तो होदि, तो तस्स खेत्तफलं जगपदरं सेढिपढमवग्ग-

जानेवाले जीवोंके भी अपने उत्पत्ति-क्षेत्रको नहीं प्राप्त करके अंतरालकालमें ही निश्चित दिशाको छोड़कर अन्य दिशा या विदिशामें गमन करनेका अभाव है । और न उत्पत्तिक्षेत्रके समान अन्य क्षेत्र पर स्थित जीवोंके भी अनियत गमन होता है, क्योंकि, उनका गमन एक दिशामें ही, अर्थात् उत्पत्तिक्षेत्रकी ओर ही, नियत हो चुका है । तिरछे गमन करनेवाले भी जीवोंके अपनी उत्पन्न होनेवाली दिशाको छोड़कर अन्य दिशाको गमन नहीं होता है । उत्पन्न होनेकी दिशाको जाते हुए भी जीवोंके अपने उत्पन्न होनेके क्षेत्रके समान अन्य स्थानको नहीं प्राप्त करके अन्तरालमें सर्वत्र ऊपरकी ओर वलनका अभाव है । इसलिए सभी नारकावासोंसे मनुष्यक्षेत्रको आनेवाले और नारकावासमें प्रतिष्ठित होते हुए नियत क्षेत्रकी ओर प्रवर्तमान सम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शन सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग ही है ।

अथवा, मनुष्योंमें उत्पन्न होनेके कारण नारकी सम्यग्दृष्टियोंका वहांके मिथ्यादृष्टियोंके समान घनाराजुप्रतरके सर्व आकाशप्रदेशोंसे निर्गमन नहीं होता है, क्योंकि, नरकगतिसे प्रतिबद्ध मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीवालें जीवोंके तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीवाले जीवोंके समान प्रतिबद्ध आकाश-प्रदेशोंका राजुप्रतरमें सर्वत्र अभाव है ।

शंका– इस सर्वत्र अभावका लिंग क्या है, अर्थात् यह किस आधारसे जाना ?

समाधान– उक्त बातको बतानेवाला यही स्पर्शन-सूत्र है ।

समीकरण करनेपर यदि एक नारकावासका विष्कम्भ एक जगत्श्रेणीको जगत्श्रेणीके

१ प्रतिषु 'उडुबलणा' म. प्रतौ 'उडुवेलणा' इति पाठः ।

मूलेण खंडियमेत्तं होदि । पुणो अदीदकाले तत्थ ट्ठाइदूण उड्ढं मारणंतियं मेल्लंताणं एदं खेत्तफलं मुहं होदि, संखेज्जरज्जुआयामो होदि । एत्थ उस्सेधेण खेत्तफलं गुणिदे तिरियलोगादो असंखेज्जगुणं मारणंतियखेत्तं होदि त्ति वुत्ते ण होदि, णिरयवासो ण एक्को वि एरिसविक्खंभसहिओ अत्थि । कधमेदं परिच्छिज्जदे ? 'णेरइया असंजद सम्मादिट्ठी सव्वपदेहि अदीदकाले तिरियलोगस्स असंखेज्जभागं फुसंति' त्ति सुत्त वयणादो । केत्तिओ पुण णेरइयावासाणं विक्खंभो होदि त्ति वुत्ते असंखेज्जजोयणमेत्तो होदि । तं जहा– सग-सगसत्थाणखेत्तं ट्ठविय सग-सगबिल-संखाए ओवट्टिदे एगबिलेण रुद्धखेत्तमसंखेज्जजोयणविक्खंभायामं होदि । तं संखेज्जरज्जूहि गुणिदे एगबिल-मस्सिदूण मारणंतियखेत्तं होदि । एदं बिलसंखाए गुणिदे सयलं मारणंतियखेत्तं होदि । एदं तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागं होदि । सव्वणिरयावासाणं खादफलम-संखेज्जजोयणमेत्तं होदूण एगरज्जुपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तं चेव होदि । कुदो ?

द्वितीय वर्गमूलसे खंडित करनेपर एक खंड मात्र होता है, तो उसका क्षेत्रफल जगत्श्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे जगत्प्रतरको खंडित करनेपर एक खंड मात्र होता है । पुनः अतीतकालमें वहां रहकर ऊपरकी ओर मारणान्तिकसमुद्घात करनेवालोंका यह क्षेत्रफल मुखरूप हो जाता है और संख्यात राजुप्रमाण आयाम होता है ।

शंका– यहांपर अर्थात् उक्त क्षेत्रमें उत्सेधसे क्षेत्रफलको गुणा करने पर तो तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा मारणान्तिकक्षेत्र हो जाता है ?

समाधान– नहीं होता है, क्योंकि, इस प्रकारके विष्कम्भसे सहित एक भी नारकावास नहीं है ।

शंका– यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान– 'नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि सर्वपदोंकी अपेक्षा अतीतकालमें तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागमात्र क्षेत्रको स्पर्श करते हैं' इस प्रकारके सूत्र-वचनसे उक्त बात जानी जाती है ।

शंका– नारकोंके आवासोंका विष्कम्भ कितना होता है ?

समाधान– असंख्यात योजन प्रमाण होता है । वह इस प्रकारसे है– अपना अपना स्वस्थानक्षेत्र स्थापित करके अपने अपने बिलोंकी संख्याओंसे अपवर्तन करनेपर एक बिलसे रुद्धक्षेत्र असंख्यात योजन विष्कम्भ और आयामवाला हो जाता है । उसे संख्यात राजुओंसे गुणा करनेपर एक बिलका आश्रय करके मारणान्तिकसमुद्घातगत क्षेत्र हो जाता है । इस प्रमाणको बिलोंकी संख्यासे गुणा करनेपर सकल मारणान्तिकक्षेत्र हो जाता है । यह मारणान्तिकक्षेत्र तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है ।

सर्व नारकावासोंका घनफल असंख्यात योजनप्रमाण होकर भी एक राजुप्रतरका